कारक प्रकरण

(14) सहयुक्तेऽप्रधाने

वृत्ति - "सहार्थेन युक्तेऽप्रधाने तृतीया स्यात्। पुत्रेण सहागतः पिता। एवं साकं सार्द्धं समं यौगेऽपि। विनापि तद्योगं तृतीया वृद्धौ यूना इत्यादि निर्देशात्।"

उदाहरण - पुत्रेण सहागता पिता। पुत्र के साथ पिता आया।

सह के अर्थ वाले शब्दों यथा - साकम्, सार्द्धम्, समम्, सह आदि के योग में अप्रधान (गौण) अर्थ में तृतीया विभक्ति आती है।

प्रदत्त उदाहरण में आने की क्रिया के साथ पिता का प्रत्यक्ष (साक्षात्) सम्बन्ध है। पुत्र का आने की क्रिया के साथ प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध नहीं है। अतएव पुत्र अप्रधान है और इसमें (पुत्र में) तृतीया विभक्ति होगी।

प्रदत्त उदाहरण में सह अर्थ वाले साकम् आदि शब्दों के योग में भी पुत्रेण में तृतीया विभक्ति हुई है। एवम् इति से सह के अर्थवाची साकम्, सार्द्धम्, समम् आदि के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

विनाऽपि इति - सह (साथ) अर्थ वाले शब्दों का साथ न हो किन्तु सह (साथ) अर्थ का बोध हो। ऐसे में अप्रधान अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है।

यथा - वृद्धौ यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः सूत्र में यूना (युवक के साथ) में सह के बिना सह (साथ) अर्थ का बोध होने के कारण तृतीया विभक्ति है।

(15) येनाङ्गविकारः ॥

वृत्ति- येनाङ्गेन विकृतेनाङ्गिनो विकारः लक्ष्यते ततः तृतीया स्यात्। अक्ष्णा काणः। अक्षिसम्बन्धिकाणत्वविशिष्ट इत्यर्थः। अङ्गविकारः किम्? अक्षि काणमस्य।

उदाहरण - कर्णेन बधिरः। कान से बहरा है।
अक्ष्णा काणः। आँख से काना है।
पादेन खञ्जः। पैर से लंगड़ा है।

व्याख्या - जिस अङ्ग के विकृत (=विकार युक्त) होने से सकल शरीर का विकार अभिव्यक्त होता है, उस अङ्गवाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है। यह अङ्गवाचक शब्द ~~२~~ 'स्पष्टरूप से विकारयुक्त होना चाहिए। साथ ही इस अङ्गवाचक शब्द द्वारा अङ्गीपुरुष को विकार से युक्त मानना अनिवार्य ~~मान लियाजाता~~ है।

उदा०- अक्ष्णा काणः। (आँख से काना)

यहाँ अक्षि (आँख) अङ्ग विकृत है। ~~[illegible]~~ आँख से देखने में असमर्थ है इसकारण सम्पूर्ण पुरुष को 'काण' (काना) कहा गया है। अक्षि (आँख) अङ्ग में विकृति है। इसीकारण (अङ्गी) पुरुष को काना (काण) कहा गया। इसकारण विकृत अङ्ग को बोध कराने वाला 'अक्षि' (आँख) से तृतीया विभक्ति हुई।

अङ्गविकार इति - विकृत अङ्ग से व्यक्ति को विकृत होना आवश्यक है। ऐसा न होने पर तृतीया विभक्ति विकृत अङ्गवाचकशब्द में नहीं होगी। उदा०- अक्षि काणमस्य (इसकी आँख कानी है)- ~~(क)~~ यहाँ अङ्ग अक्षि (आँख) विकृत है किन्तु व्यक्ति को विकृत नहीं कहा गया। इसकारण अक्षि शब्द से तृतीया न होकर प्रथमा विभक्ति ही रहेगी।

(16) इत्थंभूतलक्षणे ⇒

"वृत्ति - कञ्चित्प्रकारं प्राप्तस्य लक्षणे तृतीया स्यात्। जटाभिस्तापसः। जटाद्याप्यतापसत्वविशिष्ट इत्यर्थः।"

उदाहरण - जटाभिर्तापसः। (वह जटाओं के कारण तापस है।)

जिस चिह्न के द्वारा किसी भी प्रकार के स्वरूप को अभिव्यक्त किया जाय तो उस चिह्नवाचक शब्द से तृतीया विभक्ति आती है। दूसरे शब्दों में जिस लक्षण के सहारे किसी विशेष अवस्था का प्रकटीकरण हो, तो उस लक्षण में तृतीया विभक्ति होती है। 'यह इसप्रकार का है' ऐसा अभिव्यक्त करने के लिए व्यवहृत लक्षण (चिह्न) के वाचकशब्द में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदा० - जटाभिस्तापसः (जटाओं से यह तापस है) यहाँ जटाओं से ज्ञात होता (पता चलता) है कि यह व्यक्ति तापस बन गया है। जटाओं से पूर्व (पहले) यह तपस्वी नहीं ज्ञात होता ~~है~~ था। जटा रूपी लक्षण के कारण ही उसे तापस (तपस्वी) माना गया है। जटाओं से सूचित (अभिव्यक्त) किये जाने वाले (तपस्या के गुण तापसत्व से युक्त है। यह 'जटाभिस्तापसः' से) इस वाक्य का अर्थ है।

इसीभाँति - (ख) आकृत्या शूरः (आकृति से वीर है)

(ग) वेषेण पण्डितः (वेश से पण्डित है।